एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख से एक दक्ष प्रबंधक की यात्रा में संस्था प्रमुख की भुमिका.

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)
National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़,

रायपुर – 492007

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आई.ई.एस)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी छत्तीसगढ़ रायपुर

डॉ योगेश शिवहरे
अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी छत्तीसगढ़ रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा
उप संचालक
एस.सी.ई.आर.टी छत्तीसगढ़ रायपुर
एवं
प्राचार्य
श्री राम हरि शराफ
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

समन्वयन

श्री डी. दर्शन
नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशीप अकादमी
एस.सी.ई.आर.टी छत्तीसगढ़ रायपुर

माड्यूल लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

लेखक

राकेश टंडन
व्याख्याता
शा.उ.मा.वि. उतरदा जिला – कोरबा

शीर्षक - एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख से एक दक्ष प्रबंधक की यात्रा में संस्था प्रमुख की भूमिका।

क्षेत्र - शाला प्रबंधन प्रक्रिया में प्राचार्य की भूमिका।

भूमिका - एक प्राचार्य के पद के लिए योग्यता स्नातकोत्तर एवं बी.एड. डिग्री तथा शासन द्वारा निर्धारित शैक्षणिक अनुभव है। प्राथमिक शाला एवं पूर्व माध्यमिक शाला के संस्था प्रमुखों के लिए भी निश्चित शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव की मापदंड शासन द्वारा निर्धारित है। सभी संस्था प्रमुख को एक दक्ष प्रबंधक होने चाहिए। इससे विद्यालय एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास होता है।

उद्देश्य – 1.संस्था प्रमुख कुशल प्रबंधक बनकर बच्चों एवं विद्यालय के सर्वांगीण विकास कर सकेंगे।

2. शिक्षक, पालक, बालक एवं शाला प्रबंधन से संबंध स्थापित कर बच्चों के विकास में योगदान दे सकेंगे।

कीवर्ड – क्वालिफाइड संस्था प्रमुख, दक्ष प्रबंधक, शाला प्रबंधन में एनसीसी ग्राम पंचायतों की भूमिका,विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का दक्षता विकास।

प्रस्तावना - भारत भूमि में प्राचीन काल से शैक्षणिक संस्थाओं जैसे गुरुकुल एवं आश्रमों में गुरू अर्थात प्रमुख आचार्यों द्वारा एक कुशल एवं दक्ष प्रबंधन से गुरुकुल एवं आश्रमों का संचालन किया जाता था। भारतीय धर्म ग्रंथों के अनुसार त्रेतायुग में श्री राम अपने तीनों भाई के साथ गुरु वशिष्ट से शिक्षा ग्रहण किए। गुरु वशिष्ट एक दक्ष प्रबंधक थे। वे समाज के विकास के लिए अपने शिष्यों को दक्ष किए। भारतीय धर्म ग्रंथ महाभारत के अनुसार द्वापर युग में गुरु द्रोणाचार्य कुशल एवं दक्ष प्रबंधक थे।

आधुनिक भारत में भारतीय समाज में बालिका शिक्षा के प्रथम महिला शिक्षिका एवं प्रथम बालिका विद्यालय के संस्थापक श्रीमती सावित्री बाई फुले ने एक कुशल प्रबंधक के रूप में अपने संस्था की संचालन कर समाज में नारी शिक्षा को जागृत किया। **स्रोत – "महान चिंतक और राष्ट्र निर्माता - डॉ बी आर अंबेडकर" लेखक – डॉ राजाराम बनर्जी, अविनाश जी**

किसी विद्यालय के लिए एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख उसे कहेंगे जो विद्यालय के विभिन्न स्तर जैसे हाई स्कूल, हायर सेकेंडरी, पूर्व माध्यमिक शाला, एवं प्राथमिक शाला के संस्था प्रमुख के लिए आवश्यक योग्यता एवं अनुभव अध्यापन अनुभव रखता है।

कोई क्वालिफाइड संस्था प्रमुख अपनी संस्था को कुशल प्रबंधन से साधारण विद्यालय से उत्कृष्ट विद्यालय बना देता है, तो कोई संस्था प्रमुख उत्कृष्ट विद्यालय का स्तर को निचले पायदान पर ले आता है। संस्था प्रमुख एवं विद्यालय के स्तर में सुधार नहीं होता विद्यालय में अध्यापन की स्तर में गिरावट आती है। पालक, शिक्षक एवं एवं ग्रामीणों के बीच सहयोग की कमी की गुणवत्ता में गिरावट आती है।

" एक विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए एक संस्था प्रमुख को कुशल एवं दक्ष प्रबंधक होने चाहिए।" - राकेश टंडन

आधुनिक भारत के निर्माण में शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है और भविष्य में भी रहेगी। यदि शिक्षण संस्थाएं अपने विद्यालयों में उत्कृष्ट एवं सांस्कारिक विद्यार्थियों को समाज को सौपता है तो निश्चित ही राष्ट्र एवं समाज का विकास होगा। यह तभी संभव है जब सभी विद्यालय के संस्था प्रमुख अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए एवं समाज के विकास के लिए कुशल प्रबंधन करेंगे।

NEP 2.0 में भी सभी स्तर के विद्यार्थियों में कुशल शाला प्रबंधन एवं बच्चों की कौशल विकास एवं संस्कारों के विकास के साथ शिक्षण व्यवस्था स्थापित करने पर बल दिया गया है।

वीडियो लिंक - https://youtu.be/3jcJ4D8gpCs

प्रश्न 1 क्वालिफाइड संस्था प्रमुख की क्वालिफिकेशन क्या क्या क्या विशेषता है?

.....
.....

प्रश्न 2. प्रबंधक के रूप में संस्था प्रमुख की क्या-क्या विशेषताएं हैं?

.....
.....

छत्तीसगढ़ राज्य का अधिकांश विद्यालय वनांचल एवं ग्रामीण क्षेत्रों में है। यहां की अधिकांश विद्यार्थी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के हैं। इन ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश विद्यालयों में कुशल प्रबंधन का अभाव है जिस कारण से शासकीय विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था में पर्याप्त सुधार नहीं हो पा रहा है। विद्यालय प्रबंधन सुदृण करने की दृष्टी कोण से छत्तीसगढ़ शासन ने संकुल प्राचार्य तथा संकुल समन्वयक को अनेक जवाबदारी दिए हैं। सुघ्घर पढ़वैय्या, पीएमश्री स्कूल, शिक्षा के गोठ, मन की बात,पढ़ाई तुहर द्वार जैसे अनेक योजनाएं शासन द्वारा चलाई जा रही है। जिसका उचित प्रबंधन से विद्यालयों की स्थिति में सुधार हो सके। प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर में शाला प्रबंधन समिति एवं हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी स्तर में शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के माध्यम से समुदाय को स्कूलों से जोड़ने का प्रयास राज्य शासन द्वारा किया जा रहा है। समग्र शिक्षा एवं खनिज न्यास द्वारा शैक्षणिक एवं अधोसंरचना के विकास के लिए कार्य किए जा रहे हैं। केंद्र शासन द्वारा विद्यालय के शैक्षणिक गुणवत्ता एवं अधोसंरचना के विकास के लिए विद्यांजलि **2.0** पोर्टल के माध्यम से सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित कराने के लिए कार्य किए जा रहा है। लेकिन इस योजना के पर्याप्त प्रचार-प्रसार का अभाव एवं तकनीकी समस्याओं के कारण योजना धरातल स्तर पर उचित ढंग से क्रियान्वन नहीं हो पा रहा है।

श्रीमती फुलेश्वरी बंजारे प्राचार्य हाई स्कूल पताढ़ी अपने विद्यालय के शिक्षकों, शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों एवं छात्र छात्राओं के साथ मिलकर अपने अल्प अवधि के प्रभार में विद्यालय एवं छात्र छात्राओं के विकास के विशेष कार्य किए हैं।

एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख की योग्यताएं –

1. प्राथमिक शाला के शिक्षक के लिए **12**वीं उतीर्ण, डी. एड. सी जी टेट या सी टेट की परीक्षा उतीर्ण करना अनिवार्य कर दिया गया है। प्राथमिक स्तर के संस्था प्रमुख के लिए उपरोक्त योग्यता के अतिरिक्त शासन प्रशासन के दिशा निर्देश अनुसार शिक्षण अनुभव की आवश्यकता होती है।
2. पूर्व माध्यमिक शालाओं के प्रधान पाठकों के लिए न्यूनतम योग्यता स्नातक डीएड/बीएड एवं शासन प्रशासन द्वारा निर्धारित शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव है।
3. हाई एवं हायर सेकेंडरी स्कूल के संस्था प्रमुख के लिए स्नातकोत्तर के साथ बी. एड. एवं शासन प्रशासन द्वारा निर्धारित शैक्षणिक योग्यता और अनुभव है।

संस्था प्रमुख के गुण - संस्था प्रमुख को एक दक्ष प्रबंधक होने के लिए सबसे महत्वपूर्ण एवं आवश्यक गुण उसे शिक्षा मनोवैज्ञानिक की व्यवहारिक ज्ञान होना चाहिए, अनुशासन प्रिय, धैर्यवान, सहयोगी, स्पष्ट वक्ता, मोटीवेटर, कुशल मार्गदर्शक, विषय की जानकार, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, बच्चों एवं शिक्षकों तथा कर्मचारियों के लिए एक दोस्त, माता-पिता एवं प्रशासक सभी का गुण होने चाहिए तथा नवाचारी प्रवृत्ति एवं कर्मशील होना चाहिए।

हेनरी स्विलिन के अनुसार "विद्यालय प्रबंधन का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षकों छात्रों तथा अन्य कार्यकर्ताओं के बीच सहयोग स्थापित करना है।"

मारफेट के अनुसार "शिक्षा के क्षेत्र में केवल लेखा-जोखा रखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनसे अधिकतम शैक्षणिक उपलब्धियां प्राप्त करनी है।"

एक प्राचार्य के रूप में संस्था प्रमुख भूमिका

संस्था प्रमुख विद्यालय के बाह्य तथा आंतरिक प्रशासन के मध्य एक कड़ी होती है। विद्यालय में एक संस्था प्रमुख की निम्नलिखित प्रबंधकीय भुमिका है-

1.प्रशासनिक भूमिका (Administration Role)

2.शिक्षा संबधित भूमिका (Educational Role)

3.जनसंपर्क की भूमिका (Public Relation Role)

1.प्रशासनिक भूमिका (Administration Role) – इसे दो भागों में बांट सकते हैं-

अ .संस्था प्रमुख के सामान्य कार्य

ब. संस्था प्रमुख के पर्यवेक्षण कार्य

अ.संस्था प्रमुख के सामान्य कार्य -

1. छात्रों का प्रवेश तथा उनका विभाग का वर्गीकरण

2 . समय चक्र निर्माण, शिक्षण विषय तथा कक्षाओं का वितरण करना **।**

3. पाठ योजना निर्माण एवं कक्षा प्रबंधन योजना निर्माण कराकर शिक्षकों द्वारा अध्यापन सुनिश्चित करना **।**

4. एकेडमी चर्चा एवं वार्षिक रणनीति का निर्माण करना **।**

5. शिक्षकों की कमी दूर करने का प्रयास करना **।**

6. संसाधनों की व्यवस्था करना जैसे चाक, डस्टर, रजिस्टर, शिक्षक डायरी इत्यादि की व्यवस्था करना **।**

7.पुस्तकालय, वाचनालय, प्रयोगशाला, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधि, स्काउट्स एवं गाइड्स, राष्ट्रीय सेवा योजना संबंधित सामग्री की व्यवस्था करना **।**

8.विद्यालय का वार्षिक बजट तैयार करना, वित्तीय अनुदान का प्रयास करना तथा उसका उपयोग करना **।**

9. पाठ्यपुस्तक, शिक्षण सामग्री, मानचित्र तथा प्रयोगशाला संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करना **।**

10.विद्यालय में अनुशासन व्यवस्था रखना तथा शिक्षकों एवं कर्मचारियों की कठिनाइयों एवं समस्याओं का निराकरण करना **।**

11. कार्यों का विभाजन करना **।** शिक्षण कार्य वितरण के अतिरिक्त अन्य क्रियाओं का उत्तरदायित्व शिक्षकों को सौपना

12. पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था सुनिश्चित करना तथा शिक्षक - शिक्षकों कर्मचारियों का समस्याओं निवारण करना।

13. विचार, गोष्ठियों, विद्यालय का आयोजन करना तथा विद्यालय प्रार्थना के लिए की गुणवत्ता सुनिश्चित करना।

14. अधोसंरचना विकास के लिए प्रयास करना।

15. बच्चों की आर्थिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्यगत समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास करना।

16.विद्यालय स्वच्छता के लिए प्रबंध करना।

ब. संस्था प्रमुख के पर्यवेक्षण कार्य – एक प्राचार्य रूप में संस्था प्रमुख के प्रमुख पर्यवेक्षण कार्य

1. शिक्षण कार्यों का पर्यवेक्षण करना कि शिक्षक अपने कालांश में पहुंचकर पढ़ा रहा है या नहीं और छात्रों के गृह कार्यों की जांच करता है कि नहीं।

2. कार्यालय अभिलेख का पर्यवेक्षण करना। यह कि कैश बुक, स्टॉक बुक, परीक्षा परिणाम अभिलेख आदि पर्यवेक्षण का कार्य करना कि यह सब सही ढंग से हो रहा है की नहीं।

3. छात्रावास, खेलकूद, व्यामशाला, पुस्तकालय, वाचनालय,प्रयोगशाला इत्यादि की कार्यप्रणाली की परीक्षण करना।

4. सामान्य निरीक्षण करना इसके अंतर्गत परीक्षाओं, पाठ्यक्रमों, अन्य सहायक क्रियाओं का पर्यवेक्षण करना।

5. संकुल के स्कूलों का निरिक्षण तथा अधोसंरचना के विकास में तकनिकी सहयोग प्रदान करना चाहिए।

2.शिक्षा संबधित भूमिका (Educational Role)

प्राचार्य के रूप में संस्था प्रमुख की शैक्षणिक भूमिका -

प्राचार्य या संस्था प्रमुख को एक अच्छा प्रशासक के साथ एक प्रभावशाली शिक्षक भी होना अनिवार्य है।

1.शिक्षक की भूमिका का भी निर्वाह करना तथा अपने विषय का शिक्षण भी करना चाहिए।

2. शिक्षकों का प्रशिक्षण तथा अभिन्यास प्रोग्राम भी कराना चाहिए।

3. नवीन शिक्षण विधियों तथा नवीन कामों से अवगत कराना।

4.शिक्षकों के लिए संवर्धन कार्यक्रम तथा योग्यता अध्ययन के लिए प्रेरणा देना चाहिए।

5. शिक्षकों के तनाव मुक्त करने के लिए भ्रमण, स्वास्थ्य परीक्षण, मनोरंजन, योगाध्यान एवं मनोवैज्ञानिक संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए।

6. शिक्षकों के अध्यापन का अवलोकन कर गुणवत्ता विकास के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दी जानी चाहिए।

7. करियर गाइडेंस एवं बोर्ड परीक्षा के तैयारी के लिए मोटिवेशनल वर्कशॉप की जानी चाहिए।

8. छात्र-छात्राओं की परीक्षा परिणाम की समीक्षा एवं उपचारात्मक कार्य किया जाना चाहिए।

9. न्यूनतम लर्निंग आउटकम के लक्ष्य प्राप्ति के लिए सहभागिता एवं प्रेरणा दी जानी चाहिए।

10. ड्रॉपआउट कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए तथा लगातार अनुपस्थित बच्चों की विद्यालय से जोड़ने का प्रयास प्राचार्य को ग्रामीणों के साथ मिलकर की जानी चाहिए।

11. नवाचारी गतिविधियों को प्रोत्साहन दी जानी चाहिए।

12. शिक्षकों का पीएलसी समूह निर्माण कर एक्टिव एंड प्रोफेशन को बढ़ावा दी जानी चाहिए।

13. छात्रों एवं शिक्षकों के कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित की जानी चाहिए।

14. बच्चों के लिए सामाजिक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों का आयोजन की जानी चाहिए।

15. छात्र - छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिता में सक्रिय सहभागिता एवं सफलता सुनिश्चित कराने के लिए विद्यालय के शिक्षकों के साथ प्रयास की जानी चाहिए।

16. वैज्ञानिक अविष्कार अभियान, भ्रमण, विज्ञान मेला आयोजन की जानी चाहिए।

17. पाठ्येत्तर गतिविधियों का आयोजन शिक्षकों के सहयोग से की जानी चाहिए।

3.जनसंपर्क की भूमिका (Public Relation Role)

संस्था प्रमुख में जनसंपर्क की कुशलता होनी अति आवश्यक है। उनके जन संपर्क के निम्नलिखित क्षेत्र हैं

1.अध्यापकों से सतत संपर्क रहना चाहिए।

2. छात्रों से संपर्क करना चाहिए जिससे स्कूल की छात्र हित गतिविधियों का पता चलता है।

3.अभिभावकों से संपर्क करना चाहिए।

4. कर्मचारियों से संपर्क करना चाहिए।

5. शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के सदस्य एवं पदाधिकारियों से संपर्क करना चाहिए।

6.समाज के व्यक्तियों के साथ संपर्क रखना चाहिए जैसे राजनीतिक कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, प्रशासन के अधिकारियों से संपर्क रखना चाहिए।

प्रशासन सम्बंधित कर्तव्य

विद्यालय प्रशासन की प्रमुख चुनौतियां

1.अधोसंरचना की समस्या

2. मार्ग निर्देशन के अभाव की समस्या

3.शिक्षकों के बीच मतभेद

4.विद्यालय एवं समुदाय के संबंधित से की समस्या

5.परीक्षा संबंधित समस्या

6.लगातार अनुपस्थित छात्र छात्राओं की समस्या भी समस्या

7. वित्तीय समस्या

8. बढ़ते हुए कार्यालय कार्य की समस्या अकुशल कार्यालय इन कर्मचारियों की समस्या

9. अकुशल कार्यालीन कर्मचारियों की समस्या

10अनुशासनहीनता छात्र नेता जो तीन प्रकार से हम इसको व्यक्त कर सकते हैं अ
. छात्र अनुशासनहीनता

ब.शिक्षक अनुशासनहीनता

स. कर्मचारियों की अनुशासनहीनता

11.कर्मचारियों विद्यार्थी एवं शिक्षा में नशे की प्रवृत्ति एक बहुत बड़ी समस्या

12.पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन की समस्या

13.शिक्षक की शिक्षक एवं कर्मचारियों की समस्या

14.न्यूनतम अधिगम स्तर हासिल न कर पाने वाले बच्चे

15.ड्रॉपआउट बच्चे एक समस्या के रूप में **16.**
बच्चों की स्कूल से भागने की प्रवृत्ति

उपरोक्त समस्याओं को हम विस्तृत रूप में इस तरह से समझ सकते हैं

1.**अधोसंरचना** - अधिकांश शासकीय विद्यालयों में स्कूल भवन, शिक्षक कक्ष, पहुंच मार्ग, शौचालय, नलकूप, मंच, पुस्तकालय, खेल मैदान, प्रयोगशाला, पेयजल की समस्या सामान्य बात है। एक संस्था प्रमुख को इन समस्या के निराकरण कराने के प्रयास में पूरा वर्ष बीत जाता है। कुछ समस्याओं का निराकरण हो पाता है, तो कुछ कर नहीं। कोई संस्था प्रमुख समुदाय की सहभागिता से विद्यालय में विद्यालय के अधोसंरचना के विकास में अपना योगदान देते हैं। अधोसंरचना के विकास में किए कार्य के लिए

वीडियो लिंक https://youtube.com/watch?v=TWW2hU9JgSw&feature=share

प्रधान पाठक का नाम - श्री गोकुल प्रसाद मार्बल

स्कूल का नाम - प्राथमिक चाकामार, जिला - कोरबा (छत्तीसगढ़)

2. मार्ग निर्देशन के अभाव की समस्या - आज बाल केंद्रित शिक्षा पद्धति को अपनाने के लिए जोर दिया जाता है। लेकिन जब विविध प्रश्न आते हैं, तो चयन की समस्या उठ खड़ी होती है। उचित मार्गदर्शन करने के लिए विद्यालय में प्रशिक्षित अध्यापक की आवश्यकता होती है। ऐसा नहीं होने पर समस्याएं उत्पन्न होती है।

3.शिक्षकों के बीच मतभेद - अधिकांश स्कूल के शिक्षकों में परस्पर मैत्रीपूर्ण तथा सौहार्दपूर्ण संबंध नहीं होता। कभी-कभी तो शिक्षक विद्यार्थियों को भी अपने दलों में आकृष्ट कर उन्हें अपने स्वार्थ पूर्ति का साधन बना लेते हैं। इससे विद्यालय में अनुशासन हीनता आती है और अव्यवस्था उत्पन्न होती है। अध्ययन अध्यापन प्रभावित होती है।

4.विद्यालय एवं समुदाय के बीच सामंजस्य का अभाव - बहुत सारे संस्था प्रमुख अपने ईगो के कारण

समुदाय से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते जिस कारण समुदाय का विद्यालय के शैक्षणिक एवं अधोसंरचना के विकास में योगदान नहीं हो पाता।

5.परीक्षा संबंधित समस्याएं - ग्रामीण विद्यालय में आंतरिक परीक्षाओं की व्यवस्था करना भी एक समस्या है। परीक्षा का स्वरूप कैसा होगा? परीक्षा परिणाम में अधिक से अधिक निष्पक्षता किस प्रकार लाई जाए ? परीक्षा में कक्षोंन्नती का क्या आधार रखा जाए ? यह सब आंतरिक प्रशासन के लिए एक बहुत बड़ी समस्या एवं चुनौती है।

6.लगातार अनुपस्थित छात्र छात्राओं की समस्या - विद्यालय में कुछ छात्र प्रवेश तो ले लेते हैं, लेकिन वे विद्यालय में लगातार अनुपस्थित रहते हैं। ऐसे छात्र या तो घर से स्कूल नहीं आते या फिर घर से स्कूल के लिए निकल जाते हैं, लेकिन विद्यालय तक नहीं पहुंच पाते। ऐसे छात्र शिक्षकों के लिए एक बहुत बड़ी समस्या है।

केस स्टडी

संदीप कुमार पिता दीपक कुमार शा.प्रा.शा. हरदी बाजार का छात्र था। वह घर से स्कूल के लिए निकल जाता था, लेकिन स्कूल न जाकर तालाब या खेत या जंगल की ओर चला जाता था। जब स्कूल की छुट्टी का समय होता तो वह सभी बच्चों के साथ घर पहुँच जाता था। माता - पिता को लगता था की वह स्कूल गया था और शिक्षकों को लगता था की उसके माता -पिता लापरवाह हैं और बच्चो को स्कूल नहीं भेजते हैं । वह बच्चा जब राकेश टंडन व्याख्याता शा.उ.मा.शा. उतरदा के निःशुल्क ट्यूशन सेंटर में एक दिन गया तब बच्चे की वास्तविकता सामने आई। बच्चा जब छोटा था तो उसके माता पिता उस बच्चे के मन में एक शिक्षक का चरित्र एक भयानक डरावना इन्सान के रूप में स्थापित कर दियें थे। इसी डर के कारण बच्चा स्कूल नहीं जाता था। कक्षा तीसरी का बच्चा कॉपी में उल्टा लिखता था। बहुत सारे अक्षरों को भी उल्टा लिखता था। राकेश टंडन ने उस बच्चे को प्रेम पूर्वक एवं विविध माध्यम से प्रोत्साहित कर पढ़ना लिखना सिखाया और शिक्षा के मुख्य धारा से जोड़ा। उन्होंने बच्चे के पृष्ठभूमि का अध्ययन किया तो उसने पाया कि बच्चे की माता पिता दोनों मजदुर हैं। बच्चे के पिता शराबी है और उसके माता और बच्चे से झगड़ा और हमेशा मारपीट करते रहे हैं। बच्चे के कॉपी में कई जगह हैण्ड पंप और एक बच्चा का फोटो बना दिखा। जब इसके बारे में संदीप से पूछा गया तो वह बताया की वह बच्चा संदीप स्वयं है। चूँकि उसके मोहल्ले में

पानी की कमी थी। जिसको बच्चे ने अपने चित्र में व्यक्त किया। वातावरण का बच्चे के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

7. वित्तीय समस्या - किसी भी समितियां संस्था की रीढ़ की हड्डी उस संस्था की आर्थिक स्थिति होती है। विद्यालय में छात्र-छात्राओं के हित के लिए संसाधन खरीदने के लिए, पानी, स्वच्छता, खेलकूद, रेडक्रॉस, बिजली, फर्नीचर के मेंटेनेंस के लिए पर्याप्त राशि ना हो तो विद्यालय प्रमुख के लिए यह एक बड़ी समस्या है। विद्यालयों की वित्तीय प्रबंधन में भ्रष्टाचार की जड़ लग जाए तो स्थिति विकराल हो सकती है।

8.बढ़ते हुए कार्यालय कार्य की समस्या - वर्तमान समय में केंद्र शासन एवं राज्य शासन द्वारा अनेक ऑनलाइन कार्यक्रम तथा ऑफलाइन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। शिक्षक-शिक्षिकाओं का टीकाकरण, पल्स पोलियो, मतदाता जागरूकता, जाति प्रमाण पत्र निर्माण जैसे अनेक कार्यों में लगा दी जाती है। जिससे अध्यापन कार्य बाधित होता है। विद्यालयों में कंप्यूटर ऑपरेटरों की कमी के कारण ऑनलाइन कार्य प्रभावित होते है।

9.कुशल कर्मचारी की कमी - संस्था के कार्यालय के कर्मचारी अकुशल हो तो ऐसी स्थिति में कार्यालय के अधिकांश कार्य या तो स्कूल के बाहर प्राइवेट व्यक्तियों से कराना पड़ेगा या शिक्षकों की सहयोग लेना पड़ेगा। इससे शिक्षकों का अध्यापन कार्य प्रभावित होगा या फिर संस्था में अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ेगा।

10. अनुशासनहीनता - संस्था प्रमुख के लिए एक बड़ी समस्या है अनुशासनहीनता। किसी संस्था प्रमुख का प्रथम दायित्व खुद अनुशासित एवं समय का पाबंद होना है। विद्यालय में तीन प्रकार की अनुशासनहीनता देखी जा सकती है।

10.अ - छात्रा अनुशासनहीनता - छात्र अनुशासनहीनता एक शाला के लिए प्रमुख एवं बड़ी समस्या है। इससे शाला प्रमुख के प्रति समुदाय, जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों का नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। छात्र अनुशासनहीनता को हम निम्न रूप से समझ सकते हैं। अ.विद्यार्थी प्रार्थना में विलंब से पहुंचते हैं।

ब.विद्यार्थी निर्धारित यूनिफॉर्म में नहीं आते हैं।

स.विद्यार्थी प्रार्थना में अपनी ड्यूटी नहीं करते हैं।

द.विद्यार्थी होमवर्क करके नहीं आते हैं।

य.विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षकों या अन्य छात्र-छात्राओं पर हूटिंग करते हैं।

र.विद्यार्थी विद्यालय के भौतिक संसाधनों का नुकसान पहुंचाते हैं।

व.विद्यार्थी गण विद्यालय में झगड़ा और गाली गलौज करते हैं।

ह.विद्यार्थी शिक्षकों के बात नहीं मानते हैं।

च.विद्यार्थी गण विद्यालय में गंदगी फैलाते हैं।

छ.विद्यार्थी गण छेड़खानी करते हैं। इत्यादि

10.ब - शिक्षकों की अनुशासनहीनता -

1. निर्धारित समय पर विद्यालय नहीं आना।

2. समय से पूर्व विद्यालय से पलायन कर जाते हैं।

3. नियमित कक्षा अध्यापन नहीं करातें हैं।

4. छात्र-छात्राओं को होमवर्क नहीं देते।

5. छात्र-छात्राओं का आंकलन, मूल्यांकन एवं परिणाम की समीक्षा कर कमजोर छात्र-छात्राओं के लिए उपचारात्मक उपाय नहीं करना चाहते।

6. संस्था प्रमुख द्वारा दिए कार्यों को नहीं करना चाहते।

7. अन्य शिक्षक साथियों के साथ सहयोगात्मक एवं विनम्र व्यवहार नहीं करते हैं।

8. विद्यालय में शिक्षक एवं छात्रों में गुटबाजी उत्पन्न करते हैं।

9. पाठ्येत्तर गतिविधि संबंधी दायित्वों का निर्वहन नहीं करना चाहते हैं।

10. छात्र-छात्राओं एवं एसएमडीसी के सदस्यों के साथ मधुर संबंध स्थापित नहीं करना चाहते।

11. बच्चों के शैक्षणिक विकास तथा अंतर्निहित गुणों के विकास में सहभागिता सुनिश्चित कराना अपना कर्तव्य नहीं समझते।

12. विद्यालय में नशा पान एवं छेड़खानी करना।

10.स - कर्मचारियों की अनुशासनहीनता - विद्यालय के भृत्य एवं चपरासी तथा सफाई कर्मचारी भी विद्यालय में अनुशासनहीनता करते हैं। जो इस प्रकार है –

1. सही समय पर विद्यालय नहीं आते हैं।

2. नियमित विद्यालय नहीं आते हैं।

3. विद्यालय में गुड़ाखू, तंबाकू एवं गुटखा पाउच तथा शराब जैसे नशा का सेवन ड्यूटी अवधि में करते हैं।

4. सही समय पर घंटी नहीं बजाते हैं।

5. अपने निर्धारित जगहों पर नहीं बैठते हैं।

6. विद्यालय के कक्षों की साफ-सफाई नहीं करते हैं।

7. शिक्षकों तथा प्राचार्य एवं छात्र-छात्राओं के विद्यालय हित के बातों को नहीं मानते हैं।

8. कुछ जगह के कर्मचारी छात्र छात्राओं से जनता पूर्वक व्यवहार करते हैं।

9. विभिन्न शासकीय कार्यों की अवमानना करते हैं।

10. विद्यालय प्रांगण, किचन गार्डन एवं पेड़-पौधों की सुरक्षा करने में विद्यालय का सहयोग नहीं करते हैं।

11. **पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन की समस्या -** पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन के लिए विद्यालय में समस्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती। खेल मैदान भी नहीं होते हैं। स्कूल के सभी शिक्षकों द्वारा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में इच्छा एवं उत्सुकता नहीं दिखाई जाती।

12. **शिक्षक एवं कर्मचारियों की कमी एक बहुत बड़ी समस्या है -** इसके कारण विद्यालय तथा विद्यालय सुचारू रूप से नहीं चल सकता।

13. **न्यूनतम अधिगम स्तर हासिल न कर पाने वाले बच्चे –** प्राथमिक, पूर्वमाध्यमिक, हाईस्कूल तथा हायर सेकेंडरी स्कूल के संस्था प्रमुख के लिए प्रमुख चुनौती है कि इन्हें कैसे न्यूनतम अधिगम स्तर तक पहुंचाएं।

14. विद्यालय के ड्राप आउट बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से कैसे जोड़े

15. **स्कूल से भागने की प्रवृत्ति एवं स्कूल के गेट में ताला जड़ने की स्थिति -** संस्था प्रमुख के लिए बड़ी चुनौती है। शिक्षकों द्वारा अपने कालखंड में कक्षा में नहीं जाने तथा कक्षा में एक्टिव लर्निंग का नहीं होना बच्चों का कक्षा और स्कूल से पलायन करने का प्रमुख कारण है। बच्चों की विद्यालय समय पर विद्यालय में कैसे ठहराव हो इस पर सभी को चिंतन करने की आवश्यकता है।

"एक संस्था प्रमुख की नियुक्ति उसके योग्यता और अनुभव के आधार पर होती है तथा उनके कुछ निश्चित कार्य एवं दायित्व होते हैं। उनके दायित्वों के निर्वहन में अनेक चुनौतियां आती है। इन चुनौतियों का समाधान करते हुए एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख एक दक्ष प्रबंधक के रूप में यात्रा करता है।" - राकेश टंडन

एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख से एक प्रबंधक की यात्रा में संस्था प्रमुख की भूमिका –

विद्यालय में उत्पन्न होने वाले विभिन्न समस्याओं तथा चुनौतियों के समाधान के लिए एक संस्था प्रमुख को अपने विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं, छात्र-छात्राओं, बाल कैबिनेट के पदाधिकारिओं, पालकों, एसएमडीसी के पदाधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों का एक बैठक बुलाकर आपस में चर्चा कर निराकरण का उपाय खोजना चाहिए। यदि विद्यार्थी विद्यालय से पलायन करते हैं तो निश्चित ही विद्यालय में एक्टिव लर्निंग की आवश्यकता है तथा कोई भी कक्षा खाली ना रहे। सभी शिक्षक अपने समय पर कक्षा में जाएं। अधोसंरचना संबंधित समस्त समस्याओं के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए तथा उच्चाधिकारियों से चर्चा कर निराकरण करना चाहिए। नशा संबंधी तथा अन्य छेड़खानी संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए समय-समय पर विद्यालय में मोटिवेशनल कार्यक्रम तथा पुलिस प्रशासन विभाग द्वारा भी विविध कार्यक्रम का आयोजन की जानी चाहिए। कैरियर गाइडेंस की कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए। शिक्षकों के बीच मतभेद ना हो ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए।

वित्तीय स्थिति से निपटने के लिए समुदाय की विद्यालय में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए। कार्यालीन कर्मचारियों को ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। ड्रॉपआउट, लगातार अनुपस्थित छात्र-छात्राएं को विद्यालय में लाने के लिए शिक्षक- शिक्षिकाओं को पालको तथा छात्र-छात्राओं से सतत संपर्क करना चाहिए। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन के लिए विद्यालय के समस्त शिक्षकों को सक्रिय होने की आवश्यकता है। यदि विद्यालय में शिक्षक तथा कर्मचारी की कमी है तो इसको ग्राम पंचायत एवं शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के माध्यम से दूर की जानी चाहिए। छात्र-छात्राओं की न्यूनतम अधिगम स्तर को हासिल करने के लिए प्राथमिक शाला से ही शिक्षकों तथा पालको को प्रयास की जानी चाहिए।

विद्यालय में समुदाय की सहभागिता जब तक नहीं होगी तब तक विद्यालय की सर्वांगीण विकास नहीं हो सकती। वास्तव में विद्यालय शाम **4:00** बजे से सुबह **10:00** बजे तक सुनसान रहता है। इस स्थिति में विद्यालय की देखभाल करने के लिए शाला प्रबंधन एवं विकास समिति द्वारा और भी उप समितियों का निर्माण की जानी चाहिए। जिसके माध्यम से विद्यालय की देखभाल एवं निरीक्षण हो सके कि विद्यालय में कौन-कौन शिक्षक समय पर आतें हैं या नहीं आतें हैं। कोई शिक्षक पढ़ाते हैं कि नहीं पढ़ाते हैं तो बच्चों को समझ आता है की नहीं। फिर इन सबके पीछे कारण क्या है? इनको भी जानने की आवश्यकता है। इसके लिए संस्था प्रमुख तथा शाला प्रबंधन समिति के पदाधिकारी बैठ कर उन शिक्षकों से चर्चा कर सकते हैं। शाला प्रबंधन एवं विकास समिति को विद्यार्थियों के निगरानी के लिए भी एक निगरानी समिति बनाने की आवश्यकता है। जो यह देखे कि कौन-कौन से विद्यार्थी विद्यालय नहीं पहुंच पा रहे हैं तथा उसके कारण क्या है एवं उसके निवारण के लिए उनके माता-पिता से मिलकर प्रयास करना चाहिए।

"एक संस्था प्रमुख को कुशल नेतृत्व, त्वरित निर्णय क्षमता, अनुशासन प्रिय, मार्गदर्शक, विनम्र, विषय विशेषज्ञ, धैर्यवान, समय के पाबंद, कर्मशील एवं शिक्षा मनोविज्ञान की जानकार होना चाहिए।" – राकेश टंडन

केस स्टडी

छत्तीसगढ़ के कोरबा जिला मुख्यालय से लगभग **50** किलोमीटर पश्चिम की ओर कोरबा-हरदी बाजार-सीपत रोड में तथा विकासखंड मुख्यालय पाली से लगभग **50** किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में जिला तथा ब्लॉक मुख्यालय का अंतिम छोर का अनुसूचित जनजाति बाहुल्य वनांचल ग्राम उतरदा में **1981** से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उतरदा स्थापित है।

सन **2013** में विद्यालय में श्रीमती रमाउमा निडी का प्राचार्य के रूप में पदस्थापना हुई। विद्यालय भवन विहीन था। एक माध्यमिक शाला के खपरैल के भवन में विद्यालय का संचालन हो रहा था। विद्यालय परिसर में लगभग **8** खंडहर भवन थे। विद्यालय का स्तर खेलकूद में अच्छा था, शिक्षण और अन्य गतिविधियों में विद्यालय के स्तर बहुत ही कमजोर था। सन **2013** में ही विद्यालय नवीन भवन में विद्यालय शिफ्ट हुआ। संस्था प्रमुख श्रीमती रमाउमा निडी एक ईमानदार व्यक्तित्व की इंसान थी। सत्र **2012-13** में विद्यालय का कक्षा **10**वीं एवं **12**वीं का परीक्षा परिणाम लगभग **40%** से **50%** था। श्रीमती रमाउमा निडी विद्यालय के शैक्षणिक स्तर के सुधारने के लिए वार्षिक कार्य योजना, कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षक व्यवस्था, अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन, सतत मूल्यांकन एवं पालकों का संपर्क अभियान चलाकर कक्षा **10**वीं एवं **12**वीं का परीक्षा परिणाम **90%** से ऊपर लाने में सफलता हासिल की।

उनके कार्यकाल में छात्र-छात्राएं विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों में, विज्ञान के प्रतियोगिताओं में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल की पहचान बनाई। सांस्कृतिक गतिविधि में भी विद्यालय जिला एवं राज्य स्तर के विविध गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। खेलकूद में बच्चों ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपने स्थान सुनिश्चित की। लेकिन जनप्रतिनिधियों से उसका भाषागत समस्या होने के कारण मधुर सम्बन्ध नहीं रही। स्काउट गाइड की गतिविधि बंद हो गई। छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की अनुशासन का इस तरह सामान्य रहा। विद्यालय के अधोसंरचना के विकास में कोई विशेष पहल नहीं हो सका। एनटीपीसी सीपत को विद्यालय में सामुदायिक सहभागिता के लिए आमंत्रित किया गया।

प्राचार्य श्रीमती रमाउमा निडी एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख थी। वे अपने कुशलता एवं सूझबूझ से विद्यालय के समस्याओं के निराकरण करने का लगभग **80%** सफल प्रयास किए। लेकिन

विद्यालय एवं छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में अपनी पूरी योगदान नहीं दे सकी। वित्तीय स्थिति प्रबल होने के बावजूद भवनों का डिस्मेंटल नहीं हो सका, पानी एवं बिजली के लिए कुछ हद तक सुविधा थी।

सितंबर सन 2020 में प्राचार्य श्रीमती रमाउमा निडी का प्रतिनियुक्ति स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल हरदी बाजार में हो गई। सभी को लगने लगा किया विद्यालय के स्तर में गिरावट आएगी। उनके जाने के बाद विद्यालय को एक प्रशिक्षित क्वालिफाइड प्रभावशाली व्यक्तित्व का एक उम्दा प्रभारी प्राचार्य श्री जी पी लहरें के रूप में मिला।

इनके कार्यकाल में छात्र-छात्राओं शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं कर्मचारियों के अनुशासन स्तर में सुधार एवं कसावट उत्पन्न हुआ। शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य, जनप्रतिनिधियों एवं पालकों के साथ विद्यालय का मधुर संबंध स्थापित हुआ। परीक्षा परिणाम लगभग 95% से ऊपर रहा। छात्र-छात्राओं का वैज्ञानिक गतिविधि, सांस्कृतिक गतिविधि, खेलकूद, भाषण, रंगोली प्रतियोगिता, स्काउट्स एवं गाइड्स की गतिविधियां. राष्ट्रीय सेवा योजना तथा सामाजिक जागरूकता के अनेक कार्यों का संचालन हुआ। समस्याएं और चुनौतियों को शिक्षक-शिक्षिकाओं छात्र-छात्राओं,पालकों एवं जनप्रतिनिधियों से सतत संपर्क कर कम किया गया। ड्रॉपआउट एवं लगातार अनुपस्थित बच्चों की संख्या में कमी आई। वर्षों से खंडहर पड़े जर्जर भवनों को ग्राम पंचायत के सहयोग से डिस्मेंटल किया गया। शाला में बागवानी किए गए। एनटीपीसी सीपत के द्वारा 21 नग ग्रीन बोर्ड, एक सेट कंप्यूटर, सीसी रोड निर्माण, साइकिल स्टैंड निर्माण, पुरुष शौचालय का रिपेयरिंग, बरामदा का रिपेयरिंग, कोर्टयार्ड का रिपेयरिंग, बैडमिंटन कोर्ट का निर्माण, ग्राउंड की लेवलिंग, बालिका एवं बालक शौचालय का निर्माण,बोर खुदाई एवं पंपसेट फिटिंग, पेयजल व्यवस्था एवं टेराकोटा का कार्य, पोर्च में ब्लैक स्टोन का कार्य, तीन प्रयोगशालाओं में प्लेटफार्म निर्माण एवं टेराकोटा का कार्य, सेनेटरी पैड मशीन तथा सेनेटरी पैड डिस्पोजल मशीन भी प्रदान की गई।

विभिन्न एनजीओ के द्वारा स्वच्छता संबंधी कार्य किए गए। सिंटेक्स एवं हाथ धुलाई के लिए सिस्टम प्रदान किया गया। विद्यालय में पानी की उचित व्यवस्था, बिजली की उचित व्यवस्था, विद्यालय में विविध की गतिविधियों का संचालन हुआ। साबुन बैंक की स्थापना, आई टी लैब, हेल्थकेयर लैब, गणित लैब, भौतिक लैब, जीव विज्ञानं लैब, रसायन शास्त्र लैब, स्मार्ट क्लासरूम, सहेली कक्ष,

पुस्तकालय, इको क्लब, ऑक्सीजोंन, जैविक खाद निर्माण स्थल, बागवानी और अन्य गतिविधियों का संचालन होने लगा।

प्राचार्य श्री जी पी के पी के मार्गदर्शन एवं व्याख्याता श्री राकेश टंडन के नेतृत्व में स्वच्छता रेटिंग में स्कूल दो स्टार से पांच स्टार में आ गया एवं विद्यालय के टीम के प्रयास एवं सहयोग से विद्यालय में कोरबा जिले का प्रथम पंजीकृत विज्ञान क्लब एवं विज्ञान केंद्र की स्थापना की गई । स्कूल का का रंग रोगन, प्राचार्य कक्ष, शिक्षक कक्ष. कार्यालय कक्ष की व्यवस्था में पूरे कोरबा जिला में स्थान उत्कृष्ट रहा ।

वीडियो लिंक – 1. https://youtu.be/APDsOJtGDcs

2. https://youtu.be/yT7L-e0AoUM

3. https://drive.google.com/folderview?id=1VYdRNYCEZk-3TcBa5BBJFqtbPkAc4Mk4

चर्चा के प्रश्न

प्रश्न **1.** आप कोरबा जिले के दूरस्थ वनांचल ग्राम के विद्यालय में एक संस्था प्रमुख के रूप में हो और वहां अनुशासनहीनता की चुनौतियां है, तो उसके निराकरण के लिए आपकी क्या रणनीति होगी **?**

....

.प्रश्न **2** . आपकी पदस्थापना एक भवन विहीन तथा शिक्षक विहीन विद्यालय में होती है, तो आप इस समस्या को हल करने में आप की क्या रणनीति होगी**?**

..

सारांश

विद्यालय के संस्था प्रमुख क्वालिफाइड होते हैं। उसमें से कुछ एक दक्ष प्रबंधक के रूप में अपने आप को स्थापित कर पाते हैं। एक क्वालिफाइड विद्यालय प्रमुख को एक दक्ष प्रबंधक बनने के लिए विशेष गुण होते हैं। जो संस्था प्रमुख समुदाय, जनप्रतिनिधियों, पालकों एवं शिक्षकों के साथ मधुर संबंध स्थापित कर विद्यालय के अधोसंरचना, शैक्षणिक एवं अनुशासनहीनता जैसे समस्याएं एवं चुनौतियों का हल कर विद्यालय, शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में योगदान दे, वही एक क्वालिफाइड संस्था प्रमुख एक दक्ष प्रबंधक के रूप में यात्रा में एक संस्था प्रमुख की यात्रा है, और यही एक संस्था प्रमुख की भूमिका होती है।

संदर्भ – 1. विद्यालय प्रबंधन एवं संस्था प्रमुख की भुमिका (सेमिनार आलेख) - डॉ प्यारे लाल आदिले

2. School Management – M. Dash, Meena Dash

3.School Administration and Management – S K Kochar

4. Educational Administration Supervission J. Mohanty

5. A Workshop in DIET Korba by – Gaurav Sharma

6. A Hand Book of School Management – Patric Weston Joyce 1863

मॉड्यूल के मूल्यांकन के लिए प्रश्न

1.पहला आधुनिक भारत में बालिका शिक्षा के अग्रदूत प्रथम महिला शिक्षिका थी ?

अ. सावित्रीबाई फुले

ब.इंदिरा गांधी

स. मिनीमाता

द. अवंती बाई

2. एक हायर सेकेंडरी के संस्था प्रमुख की शैक्षिक योग्यता क्या क्या है?

अ. स्नातकोत्तर

ब.बी.एड.

स.शासन प्रशासन द्वारा निर्धारित अनुभव

द .उपरोक्त सभी

3. विद्यालय प्रबंधन का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षकों, छात्रों तथा अन्य कार्यकर्ताओं के बीच संबंध स्थापित करना है, यह किसने कहा?

अ. डॉ भीमराव अंबेडकर

ब. डॉ राधाकृष्णन

स.हेनरी स्विलिन

द. मार्कफेड

4.संस्था प्रमुख की प्रमुख भूमिका कौन-सी नहीं है?

अ. प्रशासनिक भूमिका

ब.शिक्षा संबंधी भूमिका

स.जनसंपर्क की भूमिका

द.उपरोक्त सभी उपरोक्त

5. यदि छात्र विद्यालय से भागते हैं, तो स्कूल में ताला लगाने का निर्णय कौन लेगा?

अ.बाल कैबिनेट के सदस्य

ब. प्राचार्य

स. ग्राम सरपंच

द.शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के सदस्य गण

6.एक संस्था प्रमुख का कर्तव्य नहीं है **?**

अ.प्रशासन संबंधी

ब.निरीक्षण संबंधित

स.पाठ्य सहगामी क्रिया एवं खेलकूद के प्रति

द.इनमें से कोई नहीं

7. "एक विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए एक संस्था प्रमुख को एक कुशल एवं दक्ष प्रबंधक होने की आवश्यकता है**।**" इस कथन को किसने कहा**?**

अ. राकेश टंडन

ब.गिजूभाई

स. रामधारी सिंह दिनकर

द.मदन मोहन मालवीय

8.किसी यदि किसी संस्था में कोई भृत्य तंबाकू का सेवन करता है, तो इसके प्रति जवाबदार कौन रहेगा**?**

अ. स्वयं वृत्य

ब. स्कूल के शिक्षक गण

स. प्राचार्य

द.जनभागीदारी समिति के सदस्य

9. यदि किसी विद्यालय में कोई शिक्षक लगातार समय पर ना आए और समय से पूर्व विद्यालय से पलायन कर जाए, तो इसके प्रति जवाबदार कौन होगा**?**

अ. प्राचार्य

ब.स्वयं शिक्षक

स. जिला शिक्षा अधिकारी

द. विकास खंड शिक्षा अधिकारी

10. क्या कक्षा प्रबंधन किया जाना आवश्यक है?

अ. हां

ब. नहीं

स. इच्छा अनुसार किया जा सकता है

द. मालूम नहीं

माड्यूल के लिए दी जाने वाले अतिरिक्त संसाधन सामग्री

1.श्री कुंज किशोर, प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय डोंगाकहरौद, जिला चांपा-जांजगीर छत्तीसगढ़

वीडियो लिंक 1. https://youtube.com/watch?v=F1FKDvvmSJI&feature=share

2. श्री नरेंद्र कुमार लहरें प्रधान पाठक, शासकीय प्राथमिक शाला बछौद बलौदा जिला – चांपा-जांजगीर

वीडियो लिंक 1. https://youtu.be/PO_bbNNucOU

2. https://youtube.com/watch?v=EzWpStsa-qk&feature=share

3.**अन्य वीडियो लिंक** 1. https://youtu.be/C5LUfNjpzVk

2. https://youtu.be/_bUdRbbnwto

3. https://youtu.be/MJyXhFp7Nt8

4. https://youtu.be/eCx90FG-PvU

5. https://youtu.be/JOgohe-JUPM

6. https://youtube.com/watch?v=aLWgwa9jxWQ&feature=share

7. https://youtu.be/zMv0z8PpdNI

8. https://youtu.be/3ntQHlpf7_Y